वर्ष – 7
अंक – 25

शैक्षिक त्रैमासिक
शोध पत्रिका

शिक्षा चिंतन

त्रिमूर्ति संस्थान
कानपुर

जनवरी–मार्च 2008

अनुक्रम

			पृष्ठ
सम्पादकीय			2
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की वृत्तिक अभिज्ञता तथा उनके सामाजिक, आर्थिक स्तर का अध्ययन	:	डॉ दिनेश कुमार	3–6
प्राथमिक–स्तर पर बच्चों के नैतिक मूल्यों के विकास में माता–पिता की शिक्षा का प्रभाव	:	डॉ (श्रीमती) विभा निगम	7–10
प्रेरक प्रसंग	:	नेपोलियन बोनापार्ट	11
सहायता प्राप्त एवं असहायता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विवाहि ; एवं अविवाहित शिक्षिकाओं की सामाजिक स्वतन्त्रता का अध्ययन	:	डॉ श्रद्धा शुक्ला शालिनी गुप्ता	12–15
इण्टरमीडिएट कॉलेजों के प्रधानाचार्यो का निर्णय लेने सम्बन्धी तरीकों में प्राथमिकताओं का तुलनात्मक अध्ययन	:	डॉ सुशील चन्द्र बहुगुणा	16–19
कानपुर नगर निगम के उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की व्यावसायिक रुचियों का तुलनात्मक अध्ययन	:	डॉ मीता जमाल विदुषी तिवारी	20–25
शिक्षकों की शिक्षण प्रभाविता	:	सवित्र रुद्राणी श्रीवास्तव	26–28
वर्तमान मानव संसाधन विकास हेतु स्वामी दयानन्द के शिक्षा–दर्शन की प्रासंगिकता	:	श्रीमती मलय सिंह	29–33
साक्षरता की ओर बढ़ते कदम	:	डॉ0 कमलेश कुमार यादव	34–35
शिक्षकों की भारतीय समाज में सामाजिक स्थिति	:	डॉ0 विष्णु कुमार	36–39
वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा में स्ववित्त पोषित शिक्षण संस्थानों की उपयोगिता	:	संतोष कुमार त्रिपाठी डॉ आर0 पी0 मिश्रा	40–43
शैक्षिक परिदृश्य में आधुनिक नारी	:	बिन्दु त्रिपाठी	44–45
शैक्षिक हलचल (संकलन एवं सम्पादन)	:	सुनीता बिष्ट	46–48

शिक्षकों की भारतीय समाज में सामाजिक स्थिति

–डॉ विष्णु कुमार

* प्राध्यापक, श्री अग्रसेन पी0जी0टी0टी0 कालेज केशव विद्या पीठ, जामडोली, जयपुर (राजस्थान)

भारतीय समाज में एक व्यक्ति की सामजिक स्थिति प्रमुखतः उसकी जाति, सामाजिक वर्ग, धार्मिक समुदाय, व्यवसाय, आमदनी तथा सांस्कृतिक पदों के अनुसार मानी जाती है । शिक्षा, उसके द्वारा अर्जित की गई कुशलताओं, धन–सम्पत्ति, मिले हुए पुरस्कार, पद, पदवीं, विशेष सम्मान आदि भी उसकी सामाजिक स्थिति को बतलाते हैं ।

हमारे समाज में शिक्षक (अध्यापक या गुरु) की सामाजिक प्रतिष्ठा सदैव से ही अन्य सभी कार्य करने वालों से ऊँची रही है क्योंकि वह विद्या दान करने वाला तथा विद्यार्थियों में सुसंस्कार डालने वाला होता है । वह अपने ज्ञान, अनुभव तथा उत्तम सलाह के द्वारा निरन्तर अपने विद्यार्थियों और समाज के सभी प्रभावशाली व्यक्तियों (जैसे–राजा, मुखिया, धनिकों) तथा सामान्य मामलों में (जैसे–व्यवहार करना, कमाना, विविध व्यवसायों का ज्ञान तथा विविध कलाओं का सिखाना आदि) ज्ञान और अनुभवजनित मार्गदर्शन देते हैं ।

वैदिक व उत्तर–वैदिक काल में शिक्षकों की सामाजिक स्थिति : वैदिक और उत्तर–वैदिक कालीन भारत में अधिकतर शिक्षक ब्राह्मण वर्ग के होते थे । हिन्दू वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण अन्य तीनों वर्णों–क्षत्रिय वर्ण, वैश्य वर्ण तथा शूद्र वर्ण से ऊँचे माने जाते थे । ब्राह्मण वर्ण के लोगों का विशेष कार्य ज्ञान को अर्जित करना, संग्रहित करना, रचित करना, प्रसारित करना अथवा प्रदान करना होता था । इसके साथ ही साथ उन्हें आध्यात्मिक और धार्मिक क्रिया–कलापों में सक्रिय रूप से मार्गदर्शन व सहयोग देना होता था ।

ब्राह्मण वर्ग के शिक्षक को समाज में बहुत ऊँचा स्थान दिया जाता था । वर्ण व्यवस्था में यह भी व्यवस्था थी कि यदि किसी भी वर्ण का व्यक्ति विद्या–अर्जन के फलस्वरूप बहुत विद्वान, ज्ञानी तथा अनुभवी और शिक्षण के कार्य में दक्ष होता था तो वह भी ब्राह्मण वर्ण के समकक्ष ऊँचा माना जा सकता था । ऐसे कई महत्वपूर्ण गुरु उस प्राचीन आर्य सभ्यता के काल में हुए थे ।

उस काल के सभी गुरु (शिक्षक) बहुत उत्तम नैतिक व आध्यात्मिक चरित्र रखते थे तथा वे सादा जीवन और उच्च विचार रखते थे । उनके पास जीवनयापन करने के लिए बहुत ही कम, मामूली, सरल सी सुविधाएँ ही होती

थीं । उनके पास बहुत सा धन, सुख–सुविधाओं की वस्तुएँ, सोना–चाँदी, हीरा–जवाहरत नहीं होते थे । आर्थिक स्थिति बहुत मामूली होने के बावजूद उनकी समाज में सबसे अधिक प्रतिष्ठा, पूजा होती थी क्योंकि वे बहुत ज्ञानी और आध्यात्मिक ज्ञान के धनी होते थे । वे भगवान तक पहुँचने व शान्तिपूर्ण जीवन चलाने में अमूल्य पथ–प्रदर्शन करते थे। बड़े–से–बड़े सम्राट, राजा, जागीरदार, सेठ, साहूकार, पदाधिकारी भी उनके चरणों के आगे झुकते थे । वे लोग उनके गुरुकुलों, आश्रमों को समय–समय पर भेटें, दान, दक्षिणा आदि देते थे जो उनके शिष्यों के साधारण भरण–पोषण के लिए होती थी । भगवान राम के गुरू वशिष्ठ, राजा जनक के गुरु अष्टावक्र, भगवान कृष्ण के गुरु सांदीपन, पुराणों और उपनिषदों की रचना करने वाले वेद व्यास, पाण्डवों और कौरवों के गुरु द्रोणाचार्य तथा बहुत से अन्य गुरु जैसे पाराशर, जैमिनी आदि उच्च कोटि के शिक्षक माने जाते थे । उनकी सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति समाज में बहुत उच्च थी, उस समय गुरू का स्थान गोविन्द (भगवान) से भी ऊँचा मानते थे । प्रचलित कहावत थी–

"गुरू गोविन्द दोनों खड़े, काके लागू पाँय,
बलिहारी गुरुदेव की, गोविन्द दिये बताय ।"

गुरु की महिमा का अनुमान इस आर्यकालीन प्रार्थना से लगाया जा सकता है जिसको आज भी प्रायः सभी हिन्दू दोहराते हैं–

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

इसमें गुरु (शिक्षक) को ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर (शिव) माना गया है और साक्षात् परब्रह्म मानते हुए उनकी वन्दना की गई है । गुरुओं का अपने शिष्यों के प्रति असीम प्रेम होता था ।

अधिकतर पुरुष गुरु होते थे, लेकिन कुछ अत्यन्त विदुषी तथा ज्ञानी महिलाएँ भी गुरु या 'आचार्य' होती थीं । उसी काल की सुप्रसिद्ध स्त्री गुरु या शिक्षिकाएँ निम्नांकित थी :–

1. गार्गी, 2. मैत्रेयी 3. उर्वशी 4. अपाला 5. विश्वतारा 6. विश्ववारा 7. सिकाता 8. निवावरी 9. सेमसा 10. लोपमुद्रा ।

उस युग की प्रमुख विशेषता यह थी कि गुरु सदैव संतुष्ट व प्रसन्न रहते थे । वे कभी भी राजाओं और धनिकों के पास जाकर धन की भिक्षा नहीं मांगते थे । वे आजकल के कई गुरुओं की भांति चन्दा, फीस आदि इकट्ठा नहीं करते थे । अतः उनके आश्रमों में उनका अपना पूर्ण प्रभुत्व या स्वायत्तता थी । राजा, महाराजा और सभी लोग उनके आगे श्रद्धापूर्वक झुकते थे । शिष्य श्रद्धापूर्वक शिक्षा समाप्ति पर व अन्य लोग यदा–कदा उनको गुरु–दक्षिणा दिया करते थे।

बौद्धकाल के शिक्षक : भगवान बुद्ध द्वारा चलाये गये बौद्ध धर्म में शिक्षा, शिक्षकों और बहुत सरल, निष्कलंक रुढ़िवाद से परे, सात्विक जीवन की शैली वाले उनके शिष्यों, बौद्ध–भिक्षुओं के कार्य व्यवहार के आदर्श स्थापित किये गये । बौद्ध–भिक्षुओं और भिक्षुणियों का चरित्र बहुत लम्बे समय तक आदर्श रहा था । वे बहुत ज्ञानी और सृजनात्मक प्रकार के कार्य करने वाले चलते–फिरते शिक्षक होते थे । उनकी समाज में बहुत ऊँची सांस्कृतिक–सामाजिक स्थिति थी । बौद्ध मठों और विहारों में विद्वान भिक्षु ज्ञान प्रदान करते थे । अशोक जैसे महाप्रतापी सम्राटों ने उनको आगे समर्पण भाव से नतमस्तक किया था और उनके आदर्शों को जनता में फैलाया था । ब्राह्मणीय शिक्षा एकतन्त्रवादी थी जबकि बौद्ध शिक्षा जनतन्त्रवादी थी । उस काल में तक्षशिला, नालन्दा, पाटलीपुत्र व कन्नौज शिक्षा के प्रमुख केन्द्र अथवा विश्वविद्यालय थे । चीनी यात्रियों हवेनसांग और इत्सिंग ने नालन्दा विश्वविद्यालय में रहकर अध्ययन किया था और उन्होंने इसका भव्य वर्णन किया था ।

गुप्तकाल में शिक्षक : गुप्तकाल में धनी लोगों और राजाओं के लड़कों को बहुत शिक्षित व अनुभवी शिक्षक पढ़ाते थे और उनकी उत्तम आय होती थी । उनकी स्थिति उत्तम थी, लेकिन साधारण जनता के बालकों को गाँवों और कस्बों

में कम ज्ञान वाले शिक्षक ग्राम पाठशाला या पौशालों में पढ़ाया करते थे । उनको विद्यार्थियों के माता–पिता धन या वस्तु (अनाज, कपड़े आदि) पारिश्रमिक के रूप में देते थे । समाज में पर्याप्त सम्माननीय स्थान होता था । चन्द्रगुप्त मौर्य के शिक्षक और महामन्त्री चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को मगध के क्रूर शासक को हराने और उसे महान सम्राट बनाने में बहुत उल्लेखनीय कार्य किया था । उनकी नीति–कुशलता तथा सरल, त्यागपूर्ण और न्यायप्रियता और प्रशासनिक कुशलता से न केवल उसकी सामाजिक स्थिति बढ़ी बल्कि सभी शिक्षकों के महत्व को जनता ने समझा और उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि हुई ।

मुस्लिम काल में शिक्षक : मुस्लिम आक्रामक कुतुबुद्दीन ऐबक ने नालन्दा विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों का कत्ल कर दिया था और सारे पुस्तकालय को जला डाला था । हिन्दूओं के कई विद्यालयों और गुरुओं और पण्डितों को कई मुस्लिम शासकों ने हानि पहुँचाई थी, तथापि सभी जगहों पर छोटे बालकों को पढ़ाने के लिए पोशाले और छोटी–छोटी शालाएँ ब्राह्मण पण्डितों व कुछ अन्य गुरुओं द्वारा चलाई जाती रही थी । कई मुसलमान शासकों ने अपने धर्म की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई जगहों पर बड़े–बड़े मदरसे और मकतब खोले थे । साथ ही इस्लाम धर्म की शिक्षा संस्थाओं को काफी सहायता पहुँचाई । शिक्षक प्रायः राज्य के अनुदान से और कई मामलों में मस्जिदों और उनकी शिक्षा संस्थाओं को मुस्लिम जनता से मिलने वाली सहायता पर निर्भर होते थे । धार्मिक व्यक्ति होने के कारण उन्हें मौलवी कहा जाता था और उन्हें समाज में पर्याप्त प्रतिष्ठापूर्ण स्थान प्राप्त था, यद्यपि उनकी आर्थिक स्थिति प्रायः बहुत ही साधारण होती थी । उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति गिरती जा रही थी ।

अंग्रेजी शासन काल में शिक्षक : 17वीं और 18वीं शताब्दी में गाँवों, कस्बों और शहरों में हिन्दुओं और मुसलमानों की बहुत–सी छोटी–छोटी पाठशालाएँ, पौशाले, मदरसे चल रहे थे, लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें कोई सहायता और प्रोत्साहन नहीं दिया । विद्यार्थियों के माता–पिता व दानी लोगों के द्वारा समय–समय पर दी जाने वाली छोटी–छोटी भेंट से वे चलते थे । 1835 में अंग्रेजी शासन ने लॉर्ड मैकाले के द्वारा प्रस्तावित अंग्रेजी शिक्षा योजना को स्वीकार करके लागू किया था । मैकाले भारत की परम्परागत भाषाओं, ज्ञान, विज्ञान और उसके गुरुओं, शिक्षकों, मौलवियों, औलियों, उस्तादों आदि को बहुत घटिया किस्म का मानता था । अतः उन परम्परागत विद्याओं, विद्यालयों और शिक्षकों को जबर्दस्त धक्का लगा, उनका तेजी से पतन हुआ । अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाने वाले महाविद्यालयों, कॉलेजों व विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई । उनमें अधिकतर अंग्रेज शिक्षक नियुक्त किये गये जिन्हें ऊँची तनख्वाहें दी जाती थीं, जबकि भारतीय शिक्षकों को अंग्रेज शिक्षकों की तुलना में बहुत कम तनख्वाहें दी जाती थीं । अंग्रेजी शासन काल में कई राज्यों (जैसे–उत्तर प्रदेश) के प्रत्येक जिले में एक सरकारी हाई स्कूल की स्थापना की गयी थी, जिसके शिक्षकों को पर्याप्त वेतन दिया जाता था, लेकिन अन्य सभी गैर–सरकारी शिक्षा संस्थाएँ विभिन्न जातियों द्वारा चलाई जाती थीं और उनके शिक्षकों को काफी कम वेतन मिलता था । गाँधीजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों पर आधारित 'बुनियादी तालीम' 1938–1947 में खूब फैली । कई जगहों पर बुनियादी शालाएँ खोली गयीं । इन शालाओं के शिक्षकों को गाँधीजी के स्वाधीनता प्राप्ति, सर्वोदयी समाज, सादा जीवन और उच्च विचारों तथा समाज सेवा के उच्च आदर्शों से प्रभावित होते हुए पढ़ाना होता था । उन्हें बहुत कम वेतन मिलता था, लेकिन राष्ट्रीय भावनाओं से ओत–प्रोत होने के कारण उनका समाज में बहुत सम्मान होता था ।

स्वतन्त्रता–प्राप्ति के बाद के भारत में शिक्षक : 1947 में भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई । उस समय शिक्षा की दशा खराब थी । बहुत कम शिक्षा संस्थाएँ थी और सभी स्तरों के शिक्षकों की सामाजिक दशा खराब थीं, विशेषकर शाला शिक्षकों की दशा तो बहुत अधिक खराब थी । समय–समय पर केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकारों ने सभी स्तरों के शाला शिक्षकों और उच्च शिक्षा और उच्च शिक्षा के शिक्षकों के वेतनमानों में वृद्धि की है और उनको सभी प्रकार के भत्ते व सुविधा दी है ताकि शिक्षकों की सामाजिक आर्थिक पदस्थिति में सुधार आये । अब सरकारी और सरकार द्वारा सहायता प्राप्त स्कूलों में काफी सुधारे हुए वेतनमान लागू हैं जिनसे उनकी आर्थिक स्थिति पहले की अपेक्षा बहुत सुधरी है । अतः अब सरकारी शिक्षकों को सुदामा जैसा निर्धन व फटेहाल जैसा नहीं कहा जा सकता । उनका

जीवन–स्तर काफी ऊँचा हुआ है ।

कुछ मशहूर पब्लिक स्कूलों मे तो राज्य शिक्षा विभाग द्वारा स्वीकृत वेतनमानों से भी अधिक उत्तम वेतनमान व वेतन दिया जा रहा है । लेकिन साथ ही यह भी विरोधाभास देखने में आता है कि अनेक पब्लिक स्कूलों में शिक्षकों को बहुत ही कम वेतन दिया जाता है और उनका शोषण किया जाता है । बार–बार उनकी नियुक्ति होती है और कुछ माह बाद उनको सेवा से निकाला जाता है इस 'Hire Fire' की नीति से उन विद्यालयों कें ऐसे शिक्षकों को स्थायी नहीं करना पड़ता और कोई भविष्य निधि (Provident Fund) या पेन्शन सुविधाएँ नहीं देनी पड़ती । गर्मी की छुटिटयों का वेतन भी नहीं दिया जाता है और शिक्षकों को कोई वार्षिक वेतनवृद्धि (Increment) नहीं देते हैं ।

इस प्रकार से अल्प वेतन पाने वाले शिक्षक (जिनमें अधिकतर युवक–युवतियाँ होते है) पूर्ण उत्साह, मनोबल और तैयारी से अपनी कक्षाओं के विद्यार्थियों को नहीं पढ़ा पाते हैं, उनकी अपने व्यवसाय के प्रति कोई निष्ठा नही पनप पाती, उनको प्राइवेट ट्यूशन करने की अवांछनीय प्रवृत्ति अपनानी पड़ती है और वे शिक्षक से प्राइवेट ट्यूटर बन जाते है जिनका आजकल बहुत कम सम्मान होता है, क्योंकि उन्हें घर–घर जाकर पढ़ाना होता है या अपने घर पर विद्यार्थियों के समूहों को पढ़ाना होता है । समाज में ऐसे अध्यापकों को उचित सम्मान नहीं मिलता, विद्यार्थियों के माता–पिता और प्रायः सभी उच्च पदाधिकारी और नेता उन्हें आदरपूर्ण सामाजिक स्थान नहीं देते । अधिकांश शाला शिक्षकों को किसी भी महत्वपूर्ण शैक्षिक निर्णयों में शामिल नहीं किया जाता है, न तो शिक्षा नीतियों को बनाते समय, न पाठ्यक्रम बनाने में न और कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेने या सम्मति देने में ।

कई राज्यों में सरकारी पाठशालाओं में रिक्त पदों पर अतिथि अध्यापकों द्वारा दैनिक मानदेय या पारिश्रमिक देकर पढ़वाया जाता है । उनमें से अधिकांश योग्य और अनुभवी नहीं होते, उनमें शिक्षण व्यवसाय में कोई सच्ची लगन और निष्ठा नहीं होती । बेरोजगारी के मारे वे यह दिखावटी निम्न स्तरीय शिक्षण करने को मजबूर होते हैं । अधिक योग्यता रखने वाले युवक–युवतियों को बेरोजगारी की समस्या से बचने के लिए मजबूरी में प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में कार्य करना पड़ता है, उनको अपनी प्रगति का कोई भविष्य दिखाई नहीं देता तो उनमें निराशा हीनभावना विद्रोह भाव और लापरवाही और व्यक्तिगत विघटन का विकास होता है । उनकी प्रभावोत्पादकता कम हो जाती है और उससे उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पदस्थिति में गिरावट आ जाती है ।

वर्तमान में शिक्षकों की स्थिति अभी भी बहुत बिगड़ी हुई है । अधिकांश निजी बी.एड. स्तर के शिक्षण प्रशिक्षणालयों में प्रशिक्षण की बहुत असन्तोषजनक व दुखद स्थिति आज बनी हुई है । उनमें बहुत कम संख्या में कम योग्यता वाले और प्रायः अनुभवहीन और निस्तेज प्रवक्ता पढ़ाते हैं जिन्हें निश्चित वेतन पर रखा जाता है और उन्हें 4–5 माह के लिए ही नियुक्त किया जाता है, किसी बिरले को ही स्थायी बनाया जाता है । इस ओर केन्द्रीय और राज्य सरकारों ने गम्भीरतापूर्वक सोचने तथा स्थिति को सुधारने का अब तक कोई ठोस प्रयास नहीं किया है । शिक्षण व्यवसाय में अब सभी तरह से योग्य और अयोग्य, बहुत ही उच्च प्रेरणा वाले और बहुत ही कम प्रेरणा वाले व्यक्ति आ रहे हैं । उनके द्वारा पढ़ाये गये विद्यार्थियों का कैसा भविष्य होगा ? इस प्रकार की चिन्तनीय शिक्षा–समाजशास्त्रीय अवस्था को समझा और महसूस किया जाना चाहिए और उसको सुधारने का शीघ्रातशीघ्र प्रयास किया जाना चाहिए और शिक्षण व्यवसाय के सम्मान और विद्यार्थियों के जीवन को बचाने का भरसक प्रयास किया जाना चाहिए । शिक्षकों की स्थिति से समाज की स्थिति का भान हो जाता है ।

इस प्रकार सम्पूर्ण विचार–विमर्श का निष्कर्ष यही निकला था कि शिक्षक की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के साथ ही साथ उसकी सामाजिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओं को अवश्य ही ध्यान में रखा जाना चाहिए । भारतीय शिक्षकों में जो न्यूनताएँ है उनको प्रशिक्षणालयों में प्रशिक्षण का स्तर उठाकर तथा शिक्षकों को अधिकाधिक सुविधाएँ देकर दूर किया जाना चाहिए ।

R.N.I. No. U.P.HIN/2002/6271

बधाई संदेश

श्री कृष्ण मोहन त्रिपाठी को उनकी उत्कृष्ट सेवा तथा वरिष्ठता के आधार पर पदोन्नति प्रदान करते हुए शासन ने माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश का निदेशक नियुक्त किया है ।

प्रारंभ से ही श्री त्रिपाठी का संपूर्ण जीवन सक्रियता, परिश्रम, निष्ठा, विश्वास एवं अध्यवसाय से परिपूर्ण रहा है । ईश्वर में आस्था, भावुक हृदय, स्पष्टवादी एवं सौहाद्रपूर्ण व्यवहार आपके व्यक्तित्व की विशेषताएँ रही हैं । अभी तक श्री त्रिपाठी राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान इलाहाबाद में निदेशक के पद पर कार्यरत थे । 'सीमैट' में रहते हुए श्री त्रिपाठी अनेक प्रवृत्तियों तथा शैक्षिक शोध एवं नवाचारों के आयोजन, क्रियान्वयन में अपनी विद्धतापूर्ण, मौलिक सूझ–बूझ द्वारा जिस प्रकार का दिशा निर्देश तथा योगदान दिया है, वह चिरस्मरणीय रहेगा ।

आशा की जाती है कि आपकी योग्यता, निष्ठा, दूरदर्शिता एवं प्रशासकीय क्षमता के बलबूते पर प्रदेश में माध्यमिक शिक्षा के स्तर को समुन्नत किया जा सकेगा ।

'शिक्षा चिंतन' त्रैमासिकी के श्री त्रिपाठी प्रमुख संरक्षक हैं, अतः पत्रिका परिवार के सदस्यों को प्रसन्नता होना स्वाभाविक ही है । 'शिक्षा चिंतन' परिवार की ओर से श्री त्रिपाठी जी को ढेर सारी बधाइयाँ ।

Published by : *Mrs. Kamla Shukla* Editor : *Prof. R.S. Shukla*
Printed at Trimurti Offset : 133/214, Transport Nagar, Kanpur